हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम धन्य हों!
हमारे बाइबल की किताबों पर चल रही श्रृंखला में आपका फिर से स्वागत है। परमेश्वर की कृपा से, हमने पहले ही कई किताबों का अध्ययन किया है, और आज हम यशायाह की पुस्तक की ओर कदम बढ़ाते हैं।

इससे पहले कि हम आगे बढ़ें, यह ज़रूरी है कि हम स्पष्ट करें कि यह केवल सारांश है, पूर्ण अध्ययन नहीं। प्रत्येक विश्वासयोग्य को प्रोत्साहित किया जाता है कि वे यशायाह की पूरी पुस्तक पढ़ें, इस सारांश को पढ़ने से पहले और बाद में। यदि आपने इस श्रृंखला के पहले हिस्से अभी तक नहीं पढ़े हैं, तो हम अनुशंसा करते हैं कि आप वहां से शुरुआत करें ताकि संपूर्ण बाइबल कथा को बेहतर समझ सकें।

यदि आपको पिछले अध्ययनों तक पहुँच चाहिए, तो आप www.wingulamashahidi.org पर जा सकते हैं या शिक्षण के अंत में दिए गए नंबरों पर सीधे संपर्क कर सकते हैं।

यशायाह की पुस्तक का परिचय

लेखक और संरचना

यशायाह की पुस्तक की रचना नबी यशायाह, आमोज़ के पुत्र ने की थी।

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

इसमें 66 अध्याय हैं, जो पूरी बाइबल की 66 किताबों के अनुरूप हैं।

अन्य भविष्यद्वक्ता पुस्तकों जैसे होशे, ज़कार्याह, हाग्गाई, ओबदियाह, योना, हबक्कूक और मलाकी में अक्सर किसी विशेष ऐतिहासिक घटना, किसी राष्ट्र पर न्याय, या सीमित भविष्यद्वक्ता अवधि पर ध्यान केंद्रित होता है, यशायाह का संदेश व्यापक है, जो लगभग हर मुख्य भविष्यद्वक्ता विषय को कवर करता है।

यशायाह में विषय

यशायाह की पुस्तक में निम्नलिखित भविष्यवाणियाँ शामिल हैं:

इस्राएल और यहूदा का बाबुल में निर्वासन
बंदीगृह से उनकी वापसी
बाबुल का पतन और न्याय
मंदिर का पुनर्निर्माण
आस-पास के राष्ट्रों का उत्थान और पतन
मसीहा का आगमन (उनके चरित्र और मिशन का अद्वितीय विवरण) प्रभु का दिन (चर्च के रapture के बाद परमेश्वर का क्रोध) मसीह का सहस्राब्दिक राज्य (पृथ्वी पर 1,000 वर्ष का शासन) और बहुत कुछ…

लेखन की समयावधि

यशायाह की भविष्यवाणियाँ एक दिन, माह या वर्ष में नहीं दी गई थीं। ये लगभग 58 वर्षों (739 ईसा पूर्व – 681 ईसा पूर्व) में फैली थीं। इन दर्शनाओं को उनके जीवन के अलग-अलग समय में दिया गया, जिससे यह पुस्तक कई दशकों में प्राप्त रहस्यों का संग्रह बन गई। यही कारण है कि विषयों में कूदने जैसा लग सकता है—कुछ दर्शन मसीहा के बारे में हैं, कुछ बाबुल के बारे में, और कुछ अंत समय के बारे में।

यशायाह का जीवन

यशायाह आमोज़ के पुत्र थे। आमोज़ के बारे में बहुत कम जानकारी है, लेकिन स्पष्ट है कि वह प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। “यशायाह” का अर्थ है “प्रभु ही उद्धार है।”

यशायाह ने भविष्यद्रष्टा दृष्टियां उस वर्ष पाईं जब राजा उज्ज़ियाह की मृत्यु हुई (यशायाह 6:1)। उन्हें प्रारंभिक प्रमुख भविष्यद्रष्टाओं में गिना जाता है, जो यिर्मयाह, यज़ेकिएल और दानिएल से पहले हैं।

उन्होंने एक भविष्यद्रष्टा स्त्री से विवाह किया, जैसा कि प्रभु ने आदेश दिया, और उनके बच्चों के नाम भविष्यद्वक्ता संकेत के रूप में रखे गए (यशायाह 8:3)।

शास्त्र में, परमेश्वर अक्सर अपने भविष्यद्रष्टाओं के व्यक्तिगत जीवन का उपयोग अपने संदेश के जीवित प्रतीक के रूप में करते हैं। उदाहरण:

होशे को एक व्यभिचारी स्त्री से विवाह करने के लिए कहा गया ताकि यह इस्राएल की अविश्वासिता का प्रतीक हो (होशे 1:2)।
यज़ेकिएल को अशुद्ध भोजन खाने और लंबी अवधि तक एक ओर लेटने का आदेश दिया गया ताकि न्याय का प्रतीक दिखे (यज़ेकिएल 4:4–13)।

इसी तरह, यशायाह को तीन वर्षों तक नग्न और नंगे पांव चलने का आदेश दिया गया ताकि मिस्र और कुश के खिलाफ चेतावनी का प्रतीक बने:

यशायाह 20:2–4 (ESV):

“उस समय परमेश्वर ने आमोज़ के पुत्र यशायाह के माध्यम से
कहा, ‘जा और अपनी कमर से झूठन उतार और अपने पैरों से सैंडल निकाल लो,’ और उन्होंने ऐसा किया, नग्न और नंगे पांव चलने लगे। फिर प्रभु ने कहा, ‘जैसा मेरा सेवक यशायाह तीन वर्षों
तक मिस्र और कुश के खिलाफ चेतावनी के रूप में नग्न और नंगे पांव चला, वैसे ही अस्सीरी का राजा मिस्र और कुश के बंदियों को नंगे और नंगे पांव, उनके नितम्ब उजागर करके ले जाएगा।'”

परंपरा कहती है कि यशायाह ने संत की मृत्यु पाई, यानी उन्हें दो हिस्सों में काट दिया गया, जैसा कि हिब्रू 11:37 में संदर्भित है।

यशायाह में पांच मुख्य भविष्यद्वक्ता विषय

यशायाह की भविष्यवाणियाँ पांच मुख्य भागों में वर्गीकृत की जा सकती हैं:

1. बाबुलीय निर्वासन से पहले यहूदा और इस्राएल के बारे में भविष्यवाणियाँ

यशायाह ने बाबुलीय बंदीगृह से लगभग 150 वर्ष पहले जीवन व्यतीत किया। उनके मंत्रालय के दौरान, यहूदा और इस्राएल आध्यात्मिक रूप से बुरी तरह से बुराई में डूब गए थे। परमेश्वर ने यशायाह का उपयोग उनके आने वाले न्याय की चेतावनी देने और उन्हें पश्चाताप करने के लिए किया, फिर भी उन्होंने नहीं माना।

यशायाह 22:4–5 (ESV):

“इसलिए मैंने कहा, ‘मुझसे दूर हटो; मुझे कड़वे आँसू बहाने
दो। मेरी प्रजा की पुत्री के विनाश के लिए मुझसे सहानुभूति
न जताओ। क्योंकि प्रभु यहोवा के पास दृष्टि की घाटी में

अशांति, हिंसा और भ्रम का दिन है।'”

2. निर्वासन के बाद इस्राएल के बारे में भविष्यवाणियाँ

जब यशायाह विनाश की चेतावनी दे रहे थे, उन्होंने आशा और पुनर्स्थापन की भी भविष्यवाणी की। उन्होंने सायरस (कोरेश), फारसी राजा का उदय बताया, जो यहूदियों को रिहा करेगा और उन्हें यरूशलेम लौटकर पुनर्निर्माण करने देगा।

यशायाह 44:28 (ESV):

“सायरस के बारे में कहता है, ‘वह मेरा चरवाहा है, और वह मेरे सारे उद्देश्य को पूरा करेगा’; यरूशलेम के बारे में कहता है, ‘यह बनाए जाएगी,’ और मंदिर के बारे में कहता है, ‘तुम्हारा
आधार डाला जाएगा।'”

3. मसीहा के आगमन के बारे में भविष्यवाणियाँ

यशायाह पुराने नियम में शायद सबसे मसीही पुस्तक है।
उन्होंने भविष्यवाणी की:

क्राइस्ट का कुँवारी जन्म
“देखो, कुँवारी गर्भ धारण करेगी और पुत्र को जन्म देगी, और उसका नाम इम्मानुएल

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

होगा।” (यशायाह 7:14)
उनका चरित्र और दिव्यता
“क्योंकि हमारे लिए एक बालक जन्म लिया… और उसका नाम अद्भुत सलाहकार,
शक्तिशाली परमेश्वर, अनंत पिता, शांति का राजकुमार कहा जाएगा।” (यशायाह 9:6) उनकी पीड़ा और हमारी जगह प्रायश्चित (यशायाह 53)
“लेकिन वह हमारे पापों के लिए भेदा गया; वह हमारी अधर्मताओं के लिए कुचला गया; उस पर वह दंड था जिससे हमें शांति मिली, और उसकी चोटों से हम चंगे हुए।” (यशायाह 53:5)

यह अध्याय इतना जीवंत है कि इसे कभी-कभी “पाँचवाँ सुसमाचार” कहा जाता है। यह मसीह के क्रूस पर चढ़ाने की भविष्यवाणी करता है, कई सदियाँ पहले।

4. राष्ट्रों के खिलाफ भविष्यवाणियाँ

यशायाह ने आस-पास के विदेशी राष्ट्रों के खिलाफ न्याय का महत्वपूर्ण भाग लिखा:

बाबुल (यशायाह 13–14, 47)
मिस्र (यशायाह 19)
अस्सीरी (यशायाह 10, 14)
फिलिस्तिया (यशायाह 14:28–32)
मुआब (यशायाह 15–16)
टायर (यशायाह 23)
एडोम, कुश, दमिश्क और अन्य (यशायाह 34, 17, 18, 63)

ये न्याय दर्शाते हैं कि परमेश्वर सभी राष्ट्रों पर सर्वोच्च हैं, केवल इस्राएल पर नहीं। कुछ राष्ट्र अनुशासन के उपकरण के रूप में इस्तेमाल किए गए, लेकिन उनकी बुराई के लिए उन्हें भी जवाबदेह ठहराया गया।

यशायाह 14:5–6 (ESV):

“प्रभु ने दुष्टों की लाठी तोड़ दी, शासकों की छड़ी जो क्रोध में लोगों को निरंतर चोट देती थी…”

5. अंत समय और सहस्राब्दिक राज्य के बारे में भविष्यवाणियाँ

यशायाह ने अपने युग से परे देखा, विश्व के अंत, प्रभु का दिन, और मसीह का सहस्राब्दिक राज्य देखा।

परमेश्वर के क्रोध का दिन

यशायाह 24:1–6 (ESV):

“देखो, प्रभु पृथ्वी को खाली करेगा और उसे वीरान बनाएगा… पृथ्वी निवासियों के अधीन अस्वच्छ है; क्योंकि उन्होंने

नियमों का उल्लंघन किया, शाश्वत संधि को तोड़ा…”

सहस्राब्दिक राज्य और नया सृजन

यशायाह 65:17–25 (ESV):

“देखो, मैं नए आकाश और नई पृथ्वी बनाता हूँ, और पुराने कार्यों को याद नहीं किया जाएगा… भेड़िया और मेमना साथ
चरेंगे; शेर घास खाएगा जैसे बैल… वे मेरे पवित्र पर्वत पर
किसी को हानि नहीं पहुँचाएंगे,” प्रभु कहता है।

यशायाह की पुस्तक से मुख्य शिक्षा

यशायाह की पुस्तक हमें सिखाती है कि:

परमेश्वर का वचन कभी असफल नहीं होता। जो वह वादा करता है, वह पूरा करता है। इस्राएल के निर्वासन, मसीह के जन्म, और राष्ट्रों के पतन की सभी भविष्यवाणियाँ ठीक वैसी ही पूरी हुईं।
इसलिए, हम निश्चित हो सकते हैं कि न्याय और शाश्वत जीवन की भविष्यवाणियाँ भी पूरी होंगी।

हम अंतिम दिनों में जी रहे हैं। जब चर्च का रapture होगा, दुनिया

में महान विपत्ति का समय आएगा—एक बाग़ी दुनिया पर परमेश्वर का न्याय। केवल वही जो मेमने के रक्त में धोए गए हैं, सच्चे संत, बचेंगे और नए आकाश और नई पृथ्वी के वारिस बनेंगे।

2 पतरस 3:10 (ESV):

“परंतु प्रभु का दिन चोर की तरह आएगा, और तब आकाश गरज के साथ समाप्त हो जाएंगे…”

आप उस दिन कहाँ खड़े होंगे?

प्रभु आपको आशीर्वाद दें।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp